हनुमान
चालीसा

श्री हनुमान चालीसा

॥ दोहा ॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर।
जय कपीस तिहुं लोक उजागर॥

पवनपुत्र वीर हनुमान जी आपकी जय हो! आप तो ज्ञान व गुणों के समुद्र हैं। आपकी कीर्ति तो तीनों लोकों में फैली है।

रामदूत अतुलित बलधामा।
अंजनि-पुत्र पवन सुत नामा॥

हे पवनसुत अंजनीनन्दन! श्रीरामदूत! आपके समान दूसरा कोई बलवान नहीं है।

महावीर विक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी॥

हे महावीर बजरंग बली ! आपमें विशेष पराक्रम है।

आप अपने भक्तों की दुर्बुद्धि एवं बुरे विचारों को समाप्त करके उनके हृदय में अच्छे ज्ञान एवं विचारों को प्रेरित करने में सहायक हैं।

कंचन बरन बिराज सुबेसा।
कानन कुण्डल कुंचित केसा।।

आपका रंग कंचन जैसा है तथा आप सुन्दर वस्त्रों से तथा कानों में कुण्डल और घुंघराले बालों से शोभायमान हैं।

हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै।
कांधे मूँज जनेऊ साजै।।

आपके हाथों में बज्र और ध्वजा है तथा आपके कन्धे पर मूंज का जनेऊ शोभायमान है।

शंकर सुवन केसरी नन्दन।
तेज प्रताप महा जगबन्दन।।

आप शंकर के अवतार हैं, सारी सम्पत्ति आपकी ही तो है, तभी तो आपकी उपासना सारा संसार करता है।

विद्यावान गुणी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर।।

आप प्रकाण्ड विद्यानिधान हैं, गुणवान और अत्यन्त कार्यकुशल होकर श्रीराम-काज करने के लिए उत्सुक रहते हैं।

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया।।

श्री राम का गुणगान सुनने में आप आनन्द रस लेते हैं। भगवान श्रीराम, माता सीता व लक्ष्मण सहित आपके हृदय में निवास करते हैं।

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
विकट रूप धरि लंक जरावा।।

आपने अति छोटा रूप धारण कर माता सीता को दिखाया तथा भयंकर रूप धारण कर रावण की लंका को जलाया।

भीम रूप धरि असुर संहारे।
रामचन्द्र के काज संवारे।।

आपने विशाल रूप धारण करके राक्षसों का वध किया। भगवान राम के कार्यों में सहयोग देने वाले भी तो आप ही थे।

लाय संजीवन लखन जियाए।
श्री रघुवीर हरषि उर लाए।।

संजीवनी बूटी लाकर आपने लक्ष्मणजी को जीवनदान दिया अत: श्रीराम ने प्रसन्न होकर आपको हृदय से लगा लिया।

रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।

उस समय श्री रामचन्द्रजी ने आपकी बड़ी प्रशंसा की और यहाँ तक कहा कि जितना मुझे भरत प्रिय है उतना ही तुम भी मुझे प्रिय हो। मैं तुम्हें भरत के समान अपना भाई मानता हूँ।

सहस बदन तुम्हरो यश गावैं
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।

श्रीराम ने आपको यह कहकर हृदय से लगा लिया कि तुम्हारा यश हजार-मुख से सराहनीय है।

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा।
नारद शारद सहित अहीसा॥

श्री सनत्कुमार, श्री सनातन, श्री सनक, श्री सनन्दन आदि मुनि, ब्रह्मा आदि देवता, शेषनागजी सब आपका गुणगान करते हैं।

यम कुबेर दिक्पाल जहाँ ते।
कवि कोबिद कहि सके कहाँ ते॥

यम, कुबेर आदि तथा सब दिशाओं के रक्षक, कवि, विद्वान कोई भी आपके यश का पूर्णतया वर्णन नहीं कर सकते।

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राजपद दीन्हा॥

आप ही ने सुग्रीवजी को प्रभु राम से मिलवाया। उनकी कृपा से उन्हें खोया हुआ राज्य वापस मिला।

तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना।
लंकेश्वर भए सब जग जाना।।

आपके परामर्श को विभीषण ने माना, जिसके फलस्वरूप वे लंका के राजा बने, इसको सारा जगत जानता है।

जुग सहस्त्र जोजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।

जो सूर्य हजारों योजन की दूर है जहाँ तक पहुँचने में हजारों युग लगे, उस सूर्य को आपने मीठा फल समझकर निगल लिया।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लांघि गए अचरज नाहीं।।

आपने श्रीरामचन्द्रजी की अंगूठी मुँह में रखकर समुद्र को पार किया परन्तु आपके लिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।

संसार में जितने भी कठिन-से-कठिन काम हैं, वे सभी आपकी कृपा से सहज और सुलभ हो जाते हैं।

राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।

आप श्री रामचन्द्रजी के महल के द्वार के रखवाले हैं, आपकी आज्ञा के बिना किसमें कोई प्रवेश नहीं कर सकता।

सब सुख लहै तुम्हारी सरना।

तुम रक्षक काहू को डरना॥

आपकी शरण में आने वाले व्यक्ति को सभी सुख प्राप्त हो जाते हैं और किसी प्रकार का भय नहीं रहता।

आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक ते काँपै॥

आपके सिवाय आपके वेग को कोई नहीं रोक सकता। आपकी गर्जना से तीनों लोक काँप जाते हैं।

भूत पिशाच निकट नहिं आवै।
महावीर जब नाम सुनावै॥

हे पवनपुत्र आपका 'महावीर' नाम सुनते ही भूत-प्रेत आदि भाग खड़े होते हैं।

नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा॥

हे वीर हनुमानजी! आपके नाम का निरंतर जप करने से सब रोग नष्ट हो जाते हैं और सभी कष्ट भी दूर हो जाते हैं।

संकट ते हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै॥

जो व्यक्ति मन-कर्म-वचन से आपका ध्यान करते हैं, उनके सब संकटों को आप दूर कर देते हैं।

सब पर राम तपस्वी राजा।
तिनके काज सकल तुम साजा॥

तपस्वी राजा श्रीरामचन्द्रजी सबसे श्रेष्ठ हैं, उनके

सब कार्यों को आपने सहज में कर दिया।

और मनोरथ जो कोई लावै।
सोई अमित जीवन फल पावै।।

जिस पर आपकी कृपा हो जाये, भला वह दुःख क्यों पाए। उनके जीवन में तो आनन्द ही आनन्द है।

चारों जुग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा।।

आपका यश चारों युगों (सत युग, त्रेता युग, द्वापर युग तथा कल युग) में विद्यमान है। सम्पूर्ण संसार में आपकी कीर्ति सभी जगह पर प्रकाशमान है। सारा संसार आपका उपासक है।

साधु सन्त के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे।।

हे श्री रामचन्द्र के प्यारे हनुमान जी! आप साधु-सन्तों तथा सज्जनों अर्थात धर्म के रक्षक हैं तथा दुष्टजनों का नाश करते है।

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता।
अस वर दीन जानकी माता।।

हे हनुमंत लालजी आपको माता श्रीजानकी से ऐसा वरदान मिला हुआ है, जिसमें आप किसी को भी 'आठों सिद्धियाँ' और 'नौ निधियाँ' (सब प्रकार की सम्पत्ति) दे सकते हैं।

आठ सिद्धियाँ इस प्रकार हैं :-

१. **अणिमा**-साधक अदृश्य होकर कठिन-से-कठिन पदार्थ में प्रवेश कर जाता है।

२. महिमा-योगी अपने को बहुत बड़ा बना लेता है।
३. गरिमा-साधक अपने को चाहे जितना भारी बना लेता है।
४. लघिमा-साधक जितना चाहे उतना हल्का बन जाता है।
५. प्राप्ति-इच्छित पदार्थ की प्राप्ति होती है।
६. प्राकाम्य-इच्छा करने पर साधक पृथ्वी में समा सकता है, आकाश में उड़ सकता है।
७. ईशित्व-सब पर शासन का सामर्थ्य प्राप्त हो जाता है।
८. वशित्व-दूसरों को वश में किया जाता है।
नौ निधियां इस प्रकार हैं :-
'पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, बर्च्च।'

राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा।।

आप तो सदा प्रभु राम की शरण में रहते हैं, तभी तो आप रोग रहित हैं, राम नाम ही सब से बड़ी औषधि है।

तुम्हरे भजन राम को पावै।
जनम जनम के दुःख बिसरावै।।

आपका भजन करने वाले भक्त को भगवान श्री रामजी के दर्शन होते हैं और उनके जन्म-जन्मांतर के दुःख दूर हो जाते हैं।

अन्त काल रघुबर पुर जाई।
जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई।।

आपके जाप के प्रभाव से प्राणी अन्त समय में श्री रघुनाथ

धाम को जाते हैं। यदि मृत्युलोक में जन्म लेते हैं तो श्री हरि भक्त कहलाते हैं।

और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेइ सर्व सुख करई।।

हे हनुमानजी! आपकी सेवा करने से सब प्रकार के सुख मिलते हैं, फिर किसी देवता की पूजा करने की आवश्यकता नहीं रहती।

संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।

वीर हनुमान के उपासक सदा सुख पाते हैं उन्हें कभी कष्ट नहीं होता।

जय जय जय हनुमान गोसाईं।
कृपा करहु गुरुदेव की नाईं।।

हे वीर हनुमानजी! आपकी सदा जय हो, जय हो, जय हो, आप मुझ पर श्री गुरुजी के समान कृपा कीजिए ताकि मैं सदा आपकी उपासना करता रहूं।

जो शत बार पाठ कर कोई।
छूटहि बंदि महासुख होई।।

हनुमान चालीसा का निरंतर पाठ करने से सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होते हैं, इसके साक्षी गौरी पति भगवान शंकर जी भी हैं।

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा।।

भगवान शंकर ने यह हनुमान चालीसा लिखवाया इसलिए वे साक्षी हैं कि जो इसे पढ़ेगा उसे निश्चय ही सफलता प्राप्त होगी।

तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा॥

हे नाथ हनुमानजी! ''तुलसीदास'' सदा ही ''श्रीराम'' का दास है। इसलिए आप उसके हृदय में निवास कीजिये।

पवन तनय संकट हरण, मंगल मूरति रूप।
रामलखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप॥

हे पवनपुत्र! आप सभी संकटों के हरनेवाले हैं, आप मंगल मूरत वाले हैं। मेरी प्रार्थना है कि आप श्रीराम, श्री जानकी एवं लक्ष्मण ही सहित सदा मेरे हृदय में निवास करें।

संकटमोचन हनुमानाष्टक

बाल समय रवि भक्षि लियो तब, तीनहुं लोक भयो अँधियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सो जात न टारो।
देवन आनि करी विनती तब, छाड़ि दियो रवि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥

अंधेरा हो गया था। आपके इस शौर्य से सारा संसार विपत्ति से घिर गया था और यह संकट किसी से भी दूर न हो रहा था तब देवताओं ने आकर आपसे विनती की थी और आपने सूर्य को अपने मुख से मुक्त किया था और संसार के कष्ट को दूर किया था। हे हनुमानजी ! कौन नहीं जानता कि आपके नाम के प्रभाव से संकट दूर हो जाते हैं। तभी तो आपका नाम संकटमोचन है।

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महामुनि शाप दियो तब, चाहिय कौन बिचार बिचारो।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के शोक निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥

बालि के डर से सुग्रीवजी अपना घर-बार छोड़कर किष्किंधा पहाड़ पर रहने लगे थे। किष्किंधा पहाड़ पर बालि नहीं जा सकता था क्योंकि महर्षि मुनि ने उसे श्राप दिया था। तबसे सुग्रीव ने आपको श्री रामचन्द्रजी का पता लगाने के लिए भेजा क्योंकि वह श्री रामचन्द्रजी की प्रतीक्षा कर रहे थे। आप उस समय ब्राह्मण का रूप धारण करके रामचन्द्रजी के पास गए और उन्हें अपने साथ लेकर सुग्रीव के कष्टों का निवारण किया। संसार में ऐसा कौन-सा व्यक्ति है जो आपके संकटमोचन नाम से परिचित नहीं ?

अंगद के संग लेन गए सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौ हम सों जु, बिना सुधि लाये इहाँ पगु धारो।

हेरि थके तट सिंधु सबै तब, लाय सिया सुधि प्रान उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो।।

सुग्रीव ने महाबली अंगद के साथ अपनी सेना को सीताजी की खोज के लिए भेजा और उन्हें भेजते समय यह कहा कि यदि तुम सीताजी का पता नहीं लगा सके तो तुम सबका जीवन नहीं बचेगा। जब सब सीताजी को ढूंढ-ढूंढकर हार गए तब आपने समुद्र को लांघ कर पार किया और सीताजी का पता लगाकर लौटे। तभी सारी सेना के प्राण बचे। हे हनुमानजी ! आपका नाम संकटमोचन है, इस नाम को कौन नहीं जानता ?

रावन त्रास दई सिय को तब, राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो।
चाहत सीय अशोक सो आगि सु, दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो।।

जब लंका के राजा रावण ने सीताजी को अनेक कष्ट पहुंचाए और अपनी

राक्षसियों से कहा कि वे सीताजी को मनाने का प्रयत्न करें, उस समय हे महाप्रभु हनुमान्‌जी, आपने वहाँ पहुँचकर राक्षसों का संहार किया। उस समय सीताजी ने अपना दाह करने के लिए जब अशोक वृक्ष से अग्नि माँगी तो आपने उसी समय अशोक वृक्ष पर से श्री रामचन्द्रजी द्वारा दी गई अंगूठी उनकी झोली में डाल दी। तब सीताजी की चिन्ता दूर हुई। हे महावीर ! आपका नाम संकटमोचन है। इस बात को कौन नहीं जानता ?

बाण लग्यो उर लछिमन के तब, प्रान तज्यो सुत रावन मारो।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोण सु बीर उपारो।
आनि सजीवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्रान उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो।।

रावण के पुत्र मेघनाद का बाण लगने से जब लक्ष्मणजी मूर्छित हो गए और उनके प्राण संकट में पड़ गए, तब आप उस समय के प्रसिद्ध वैद्य सुषेण को घर समेत उठा लाए। और उनके कहने पर संजीवनी बूटी की

खोज में पूरे द्रोण पर्वत को ही उठा लाए। उसी संजीवनी बूटी से लक्ष्मणजी के प्राण बच सके। हे हनुमानजी ! आपका नाम संकटमोचन है। आपके इस नाम को कौन नहीं जानता ?

रावण युद्ध अजान कियो तब, नाग की फांस सबै सिर डारो।
श्री रघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो।
आनि खगेस तबै हनुमान जु, बन्धन काटि सुत्रास निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥

अज्ञानतावश रावण ने युद्ध में आकर ऐसा अस्त्र चलाया जिससे सब नागपाश में बंध गए और श्री रामचन्द्रजी सहित सब मूर्छित हो गए। यह उन सबके लिए बड़ा भारी संकट था। तब हे महावीर ! आपने गरुड़जी को लेकर उन बंधनों को कटवाया, जिससे सबका कष्ट दूर हुआ। हे हनुमानजी ! आपका नाम संकटमोचन है। आपके इस नाम को कौन नहीं जानता ?

बंधु समेत जबै अहिरावण, लै रघुनाथ पताल सिधारो।
देविहिं पूजि भली विधि सों बलि, देउ सबै मिलि मंत्र विचारो।
जाय सहाय भयो तब ही, अहिरावण सैन्य समेत संहारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥

जब अहिरावण लक्ष्मण समेत रामचन्द्रजी को पाताललोक ले गया, तब उसने देवी की पूजा करके दोनों भाइयों की बलि देने का निश्चय किया। उस समय आपने वहाँ पहुँचकर सेना समेत अहिरावण को मार डाला। हे हनुमानजी, आपका नाम संकटमोचन है। आपके इस नाम को कौन नहीं जानता ?

काज किए बड़ देवन के तुम, बीर महाप्रभु देखि बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसों नहिं जात है टारो।
बेगि हरौ हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥

हे हनुमानजी, आपने बड़े-बड़े देवताओं के कार्यों को सिद्ध किया। अब

आप ही स्वयं सोच व विचारकर बताइए कि मुझ जैसे दीन-दुःखी का ऐसा कौन-सा संकट है जिसे आप दूर नहीं कर सकते ? हे महावीर हनुमानजी ! हमारे संकट दूर कीजिए। हे हनुमानजी ! आपका नाम संकटमोचन है। आपके इस नाम को कौन नहीं जानता ?

श्री बजरंग बाण

दोहा– निश्चय प्रेम प्रतीत ते, विनय करें सनमान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करें हनुमान ॥

जय हनुमन्त सन्त हितकारी । सुन लीजै प्रभु अरज हमारी ॥
जन के काज विलम्ब न कीजै । आतुर दौरि महा सुख दीजै ॥
जैसे कूदि सिन्धु महिपारा। सुरसा बदन पैठि विस्तारा ॥
आगे जाय लंकिनी रोका। मारेहु लात गई सुर लोका ॥
जाय विभीषन को सुख दीन्हा। सीता निरखि परम पद लीन्हा ॥

बाग उजारि सिन्धु महँ बोरा। अति आतुर जम कातर तोरा ॥
अक्षय कुमार को मारि संहारा। लूम लपेट लंक को जारा ॥
लाह समान लंक जरि गई। जय जय धुनि सुरपुर में भई ॥
अब विलम्ब केहि कारन स्वामी। कृपा करहु उर अन्तर्यामी ॥
जय जय लखन प्राण के दाता। आतुर होय दुःख करहु निपाता ॥
जै गिरिधर जै जै सुख सागर। सुर समूह समरथ भटनागर ॥
ॐ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले। बैरिहि मारु बज्र की कीले ॥
गदा बज्र ले बैरिहिं मारो। महाराज प्रभु दास उबारो ॥
ऊंकार हुंकार महाप्रभु धावो। बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीसा। ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर शीशा ॥
सत्य होहु हरि शपथ पायके। राम दूत धरु मारु जायके ॥
जय जय जय हनुमन्त अगाधा। दुःख पावत जन केहि अपराधा ॥

पूजा जप तप नेम अचारा। नहिं जानत हौं दास तुम्हारा ॥
वन उपवन मग गिरि गृह माहीं। तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं ॥
पांय परौं कर जोरि मनावौं। येहि अवसर अब केहि गोहरावौं ॥
जय अंजनि कुमार बलवन्ता। शंकर सुवन वीर हनुमन्ता ॥
बदन कराल काल कुल घालक। राम सहाय सदा प्रति-पालक ॥
भूत, प्रेत, पिशाच, निशाचर। अग्नि बैताल काल मारी मर ॥
इन्हें मारु तोहि शपथ राम की। राखु नाथ मर्याद नाम की ॥
जनक सुता हरि दास कहावो। ताकी शपथ विलम्ब न लावो ॥
जै जै जै धुनि होत अकाशा। सुमिरत होत दुसह दुःख नाशा ॥
चरण शरण कर जोरि मनावौं। यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ॥
उठु उठु चलु तोहि राम दोहाई। पांय परौं कर जोरि मनाई ॥
ॐ चं चं चं चं चपल चलंता। ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमंता ॥

ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल। ॐ सं सं सहमि पराने खल दल ॥
अपने जन को तुरत उबारो। सुमिरत होय आनंद हमारो ॥
यह बजरंग बाण जेहि मारै। ताहि कहो फिर कौन उबारै ॥
पाठ करै बजरंग बाण की। हनुमत रक्षा करैं प्राण की ॥
यह बजरंग बाण जो जापै। ताते भूत प्रेत सब कापै ॥
धूप देय अरु जपै हमेशा। ताके तन नहिं रहै कलेशा ॥

दोहा– प्रेम प्रतीतिहि कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान ॥
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान ॥

श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्टदलन रघुनाथ कला की।
जाके बल से गिरिवर कांपै, रोग-दोष जाके निकट न झांकै।
अंजनिपुत्र महा बलदाई, संतन के प्रभु सदा सहाई।

दे बीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाए।
लंक सो कोट समुद्र सी खाई, जात पवनसुत बार न लाई।
लंका जारि असुर संहारे, सियारामजी के काज संवारे।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे, आनि संजीवन प्रान उबारे।
पैठि पताल तोरि जम-कारे, अहिरावन की भुजा उखारे।
बाएं भुजा असुर दल मारे, दाहिने भुजा संतजन तारे।
सुर नर मुनि जन आरती उतारें, जै जै जै हनुमान उचारें।
कंचन थार कपूर लौ छाई, आरति करत अंजना माई।
जो हनुमान जी की आरति गावै, बसि बैकुण्ठ परमपद पावै।
लंक विध्वंस कीन्ह रघुराई, तुलसीदास प्रभु कीरति गाई।

श्री हनुमत् स्तवन

सो०– प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन। जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर॥

अतुलित बलधामं हेमशैलाभदेहं, दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं, रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥
गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम् रामायण महामालारत्नं वंदेऽनिलात्मजम्॥
अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशम् । कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लंकाभयंकरम् ॥

उल्लंघ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः ।
आदाय तेनैव ददाह लंकां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ।
आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम् ।
पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम्॥
यत्र तत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम्।
बाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम्॥

श्री हनुमन्तवन्दन

॥ दोहा ॥

अतुलित बलधामं हेम शैलाभदेहं, दनुजवन कृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकल गुण निधानं वानराणामधीशं, रघुपति प्रियभक्तां वातजातं नमामि ॥

॥ चौपाई ॥

मंगल मूरति मारुत नन्दन । सकल अमंगल मूल निकन्दन ॥
पवन तनय सन्तन हितकारी। हृदय बिराजत अवध बिहारी ॥
मातु पिता गुरु गणपति सारद। सिवा समेत संभु सुक नारद ॥
चरण बंदि बिनवौं सब काहू । देहु राम पद नेह निबाहू ॥
बंदौ राम लखन वैदेही । जो तुलसी के परम सनेही ॥